ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997
Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (I):239-249

व्यावसायिक एवं पारम्परिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

अशोक कुमार सिंह एवं रमेन्द्र तिवारी

शिक्षक-शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज (उ0प्र0)

Email:- singhashokkumarrajpoot32@gmail.com

Received: 13.04.2025 Revised:28.05.2025 Accepted: 06.06.2025

सारांश

प्रस्तुत समस्या कथन के अन्तर्गत'' व्यावसायिक एवं पारम्परिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन ''किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् बी0ए0 कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों को जनसंख्या माना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयागराज जनपद के 20 उच्च शिक्षण संस्थानों का चयन करते हुए न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया है। इसमें बी0ए0 प्रथम वर्ष के छात्रों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें व्यावसायिक (कॉमर्स वर्ग) के 150 विद्यार्थियों तथा परम्परागत पाठ्यक्रमों (कला वर्ग) के 150 विद्यार्थियों अर्थात् कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया है। विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य (Study of Value Test) प्रस्तुत परीक्षण का निर्माण डॉ0 आर0के0 ओझा (सेवानिवृत्त) रीडर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग के0जी0के0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, मुरादाबाद (यू0पी0) व डॉ0 महेश भार्गव (प्रमोटर एवं स्थापक) नेशनल साइकोलॉजिक कॉरपोरेशन आगरा (यू0पी0) द्वारा किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है और प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या का प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसके आधार पर कई निष्कर्ष प्राप्त हुए, व्यावसायिक एवं पारम्परिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के सैद्धांतिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया, अर्थात दोनों पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्य लगभग समान है।

***कुंजी शब्दः** -व्यावसायिक, परम्पराग शिक्षण संस्थान, मानवीय मूल्य।*

प्रस्तावना-:

शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का एक मात्र साधन है। शिक्षा के अभाव में मानव जीवन सदैव अज्ञानता के अन्धकार में भटकता रहता है। शिक्षा ही एक मात्र साधन है जो मानव जीवन को सही अर्थ में सुखमय बना सकती है। शिक्षा के प्रसार से समाज में फैली समस्त कुरीतियों और बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सकता है। शिक्षा के माध्यम से समाज की सांस्कृतिक प्रगति तथा आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त हो जाता है। शिक्षा समाज में न्याय स्वतंत्रता तथा शान्ति जैसे आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है। शिक्षा वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक मानव के सम्पूर्ण विकास में उपयोगी सिद्ध हुई है। शिक्षा वह साधन है जिसे अपनाकर मानव अज्ञानता के बन्धन से मुक्त होता है।

बालक शिक्षा के दौरान ऐसे मानवीय मूल्यों को सीखता है जो उसके समाज और देश के लिए उपयोगी साबित हो सके। और आगे चलकर एक सभ्य नागरिक बन सके जो लोगों के सुखःदुख को समझ सके और उनके मानवता के विकास में अपनी अहम भागीदारी दे सके। मूल्यों का सम्बन्ध मानव की आन्तरिक चेतना से होता है। मूल्य सामाजिक चेतना और स्वस्थ समाज जीवन के लिए वरदान होते हैं और इन्हीं मूल्यों पर एक समाज की नींव खड़ी होती है। एक प्रकार से मूल्य समाज व्यवस्था का अलिखित संविधान माने जा सकते है, उनमें निहित विचारों से समाज एवं मनुष्य जीवन में प्रकाश होता है। मूल्यों का यही प्रकाश स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक बनता है। मूल्य सदैव आदर्श की बुनियाद पर खड़े होकर सुसंस्कारित समाज और आदर्श जीवन का मार्गदर्शन करते हैं। दूसरी तरफ ये मूल्य हमारी व्यवहारिकता को भी दर्शाते हैं। मानवीय मूल्य शाश्वत होते हैं परन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में उनमें परिवर्तन होता है। वास्तव में मानवीय मूल्य एक अवधारणा है, जो आदर्श एवं व्यवहारिक जीवन को सही दिशा निर्देशन करते हैं। जब हम मानवीय मूल्य की बात करते हैं तो इसमें दो चीजें सबसे महत्वपूर्ण है एक तो मानव और दूसरा मूल्य और इसमें जब हम मानव की बात करते हैं तो वास्तव में मानव एक प्रजाति है जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर निवास करती है और उसका देश काल और किसी भी स्थान से कोई लेना-देना नहीं है। अतः एक अच्छे व्यक्ति, अच्छे समाज, और अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिए इन मानवीय मूल्यों का सहारा लेना पड़ता है। मानवीय मूल्य वे आदर्श हैं जो धरती पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अपरिहार्य है कि वह उनका आचरण करे।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व-:

वर्तमान समय में हमारे देश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्कूल में पारम्परिक पाठ्यक्रम की पूर्ण रूप से आलोचना होने लगी है। पारम्परिक पाठ्यक्रम आज के दौर में विद्यार्थियों के लिए अनुपयोगी सिद्ध हो रहा है। कई शिक्षाविद और पेशेवर लोगों ने वैकल्पित स्रोतों की उचित व्याख्या की है, जिसमें पारम्परिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी पढ़ाये जाते हैं और ये व्यावसायिक पाठ्यक्रम वर्तमान समय में रोजगार परक शिक्षा

की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा द्वारा किसी खास क्षेत्र में कुशल बनाया जाता है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा का प्रमुख भाग के रूप में शामिल करना चाहिए जिससे वर्तमान समय की सबसे बड़ी बेरोजगारी की समस्या से निजात मिल सके। आज के दौर में पारम्परिक शिक्षा पूर्ण रूप से ग्रहण करने के बाद हमारे युवा और युवतियां नौकरी के लिए दर-दर भटक रहे हैं और ऐसे में उनके मन में हीन भावना का विकास हो रहा है और जिसके परिणाम स्वरूप उनके मानवीय मूल्य और नैतिक मूल्य का ह्रास हो रहा है जिसके कारण हमारी सभ्यता और संस्कृति का भी ह्रास हो रहा है। युवा पीढ़ी आज के आधुनिक दौड़ में पूर्ण रूप से मानवीय मूल्य और नैतिकता से वंचित हो चुकी जिसके कारण हमारा देश आर्थिक संकटों से गुजर रहा है।

शीर्षक- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य-:

वर्तमान शोध हेतु शोध उद्देश्य का निर्धारण किया गया है-

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना-:

उपर्युक्त शोध उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है-

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि-:

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप सर्वेक्षणात्मक है यह विधि विभिन्न समूहों के आधार पर मूल्यों के अध्ययन हेतु उपयुक्त है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या-:

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् बी0ए0 कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों को जनसंख्या माना है।

न्यादर्श-:

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयागराज जनपद के 20 उच्च शिक्षण संस्थानों का चयन करते हुए न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया है। इसमें बी0ए0 प्रथम वर्ष के छात्रों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें व्यावसायिक (कॉमर्स वर्ग) के 150 विद्यार्थियों तथा पारम्परिक पाठ्यक्रमों (कला वर्ग) के 150 विद्यार्थियों अर्थात् कुल 300 विद्यार्थियों का

चयन किया है।

उपकरण-:

विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य (Study of Value Test) प्रस्तुत परीक्षण का निर्माण डॉ0 आर0के0 ओझा (सेवानिवृत्त) रीडर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग के0जी0के0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, मुरादाबाद (यू0पी0) व डॉ0 महेश भार्गव (प्रमोटर एवं स्थापक) नेशनल साइकोलॉजिक कॉरपोरेशन आगरा (यू0पी0) द्वारा किया गया है।

सांख्यिकी विधियां-:

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

उद्देश्य-1 : व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

1.1 H_0 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Theoretical) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	Gender	N	Mean	SD	SE_M	t-value	df	p-value
B.Com.	Male	150	44.23	5.54	0.45	0.656	298	0.512
B.A	Male	150	43.81	5.73	0.47			

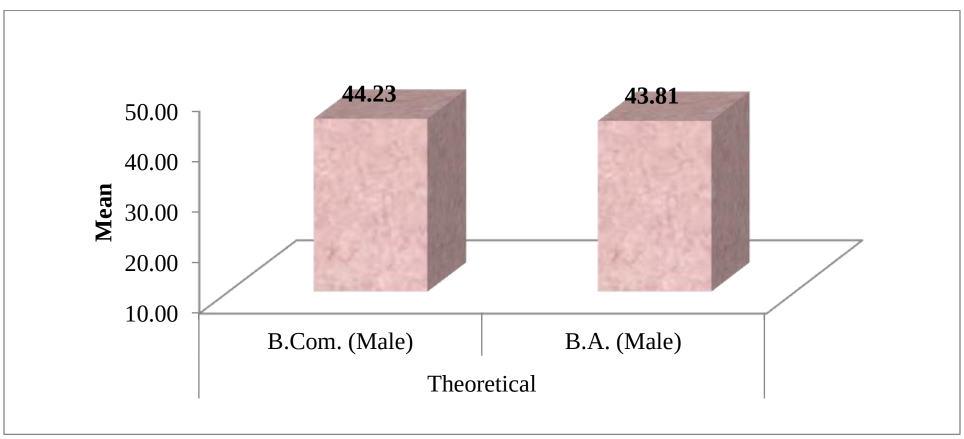

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 44.23 एवं 43.81 है तथा मानक विचलन 5.54 एवं 5.73 है। परम्परागत पाठ्यक्रम में

अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 0.43 अधिक है। परिगणित टी का मान 0.656, डिग्री ऑफ फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.512 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से कहीं अधिक है साथ ही दोनों समूह के छात्रों का टी के मान में बहुत कम अन्तर है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य परिकल्पना को स्वीकार की जाती है। प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि व्यावसायिक एवं पारम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया है, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्य लगभग समान है।

1.2 H_0 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Economic)में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	**Gender**	**N**	**Mean**	**SD**	**SE_M**	**t-value**	**df**	**p-value**
B.Com.	Male	150	42.85	2.63	0.21	0.768	298	0.443
B.A	Male	150	42.61	2.63	0.21			

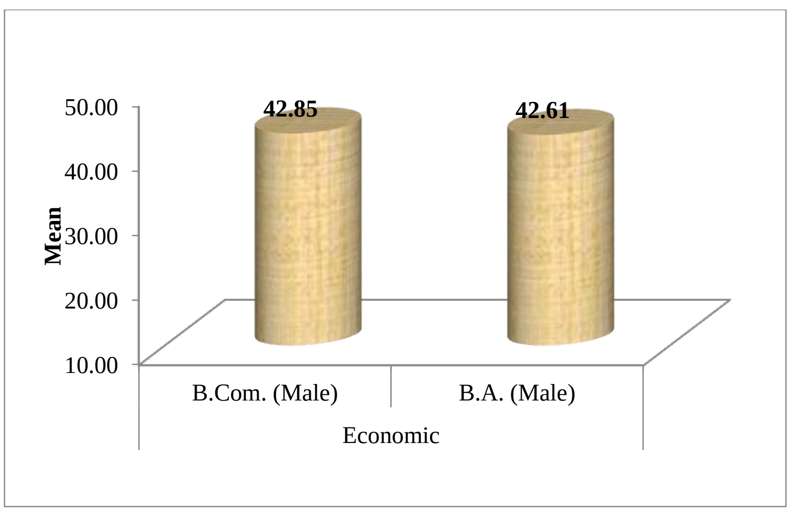

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं पारम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का आर्थिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 42.85 एवं 42.61 है जबकि मानक विचलन 2.63 एवं 2.63 है। परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का आर्थिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 0.24 अधिक है। परिगणित टी का मान 0.768, डिग्री ऑफ

फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.445 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से अधिक है साथ ही दोनों समूह के छात्रों का टी का मान में बहुत कम अन्तर है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं की जाती है। प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का आर्थिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया है, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं पारम्परागत)के छात्रों का आर्थिक मानवीय मूल्य लगभग बराबर है।

1.3 H_0 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Aesthetical) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	Gender	N	Mean	SD	SE_M	t-value	df	p-value
B.Com.	Male	150	35.30	4.78	0.39	0.986	298	0.325
B.A	Male	150	34.77	4.59	0.37			

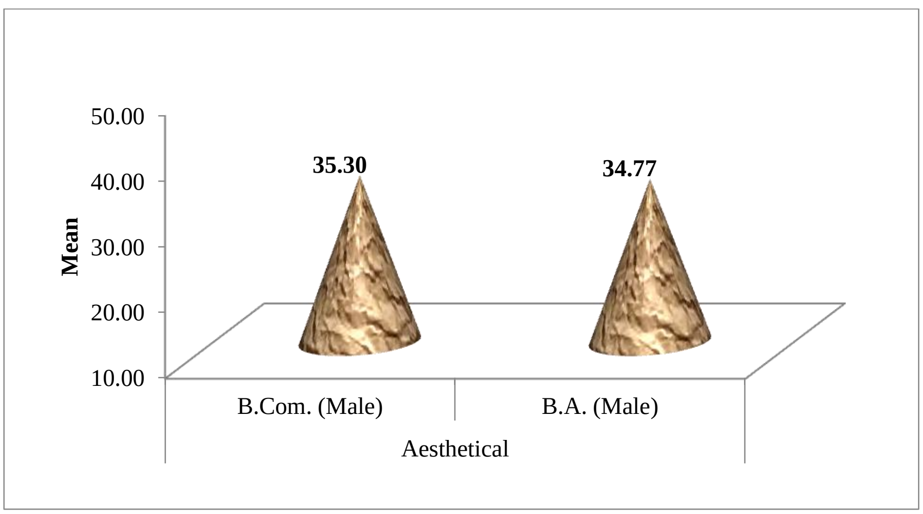

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का सौन्दर्यात्मक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 35.30 एवं 34.70 है जबकि मानक विचलन 4.78 एवं 4.59 है। पारम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सौन्दर्यात्मक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 0.53 अधिक है। परिगणित टी का मान 0.986, डिग्री ऑफ फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.325 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से

बहुत अधिक है जो सांख्यिकीय रूप से असार्थक होने के साथ ही दोनों समूह के छात्रों के टी का मान में बहुत कम अन्तर है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य परिकल्पना को स्वीकार की जाती है। प्राप्त आंकड़े इंगित करते हैं कि व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सौन्दर्यात्मक मानवीय मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया है, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत के छात्रों का सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोंण लगभग समान है।

1.4 H_0 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Social) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	Gender	N	Mean	SD	SE_M	t-value	df	p-value
B.Com.	Male	150	42.09	4.43	0.36	0.406	298	0.685
B.A	Male	150	41.89	4.39	0.36			

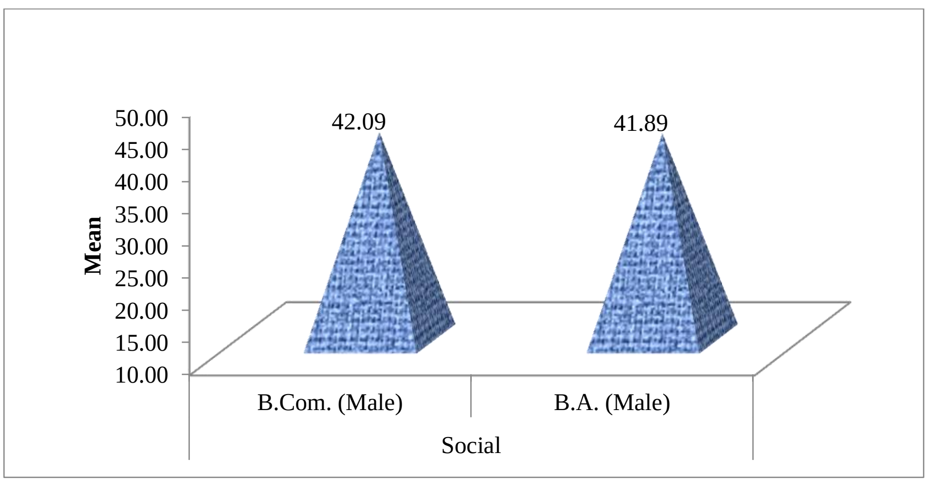

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का सामाजिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 42.09 एवं 41.89 है जबकि मानक विचलन 4.43 एवं 4.39 है। परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सामाजिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर मात्र 0.20 अधिक है। परिगणित टी का मान 0.406, डिग्री ऑफ फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.685 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से बहुत अधिक है जो कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। साथ ही दोनों समूह के छात्रों के टी का मान में बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य

परिकल्पना को अस्वीकार नहीं की जाती है। प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सामाजिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, अर्थात दोनो समूहों) व्यावसायिक एवं परम्परागत(के छात्र समान सामाजिक दृष्टिकोण रखते हैं।

1.5 H_0 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Political) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	Gender	N	Mean	SD	SE_M	t-value	df	p-value
B.Com.	Male	150	41.59	3.03	0.25	0.792	298	0.429
B.A	Male	150	41.32	2.94	0.24			

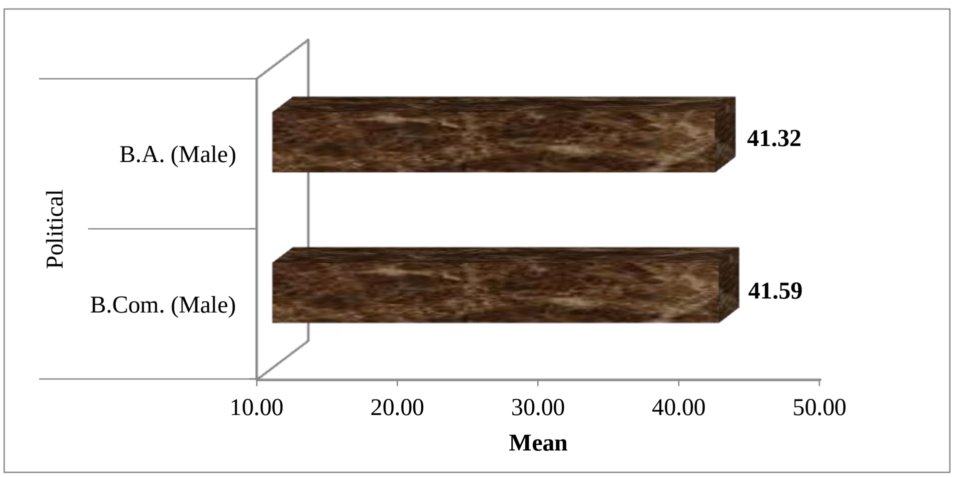

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का राजनीतिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 41.59 एवं 41.32 है जबकि मानक विचलन 3.03 एवं 2.94 है। परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का राजनीतिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर मात्र 0.27 अधिक है। परिगणित टी का मान 0.792, डिग्री ऑफ फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.429 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से बहुत अधिक है जो कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। साथ ही दोनों समूह के छात्रों के टी का मान में बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य परिकल्पना को स्वीकार की जाती है। प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का राजनीतिक

मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, अर्थात दोनो समूहों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्र समान राजनीतिक दृष्टिकोंण रखते हैं।**1.6 H_0**

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के मानवीय मूल्य (Religious) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Subject	**Gender**	**N**	**Mean**	**SD**	**SE_M**	**t-value**	**df**	**p-value**
B.Com.	Male	150	34.92	4.69	0.38	1.036	298	0.301
B.A	Male	150	34.38	4.34	0.35			

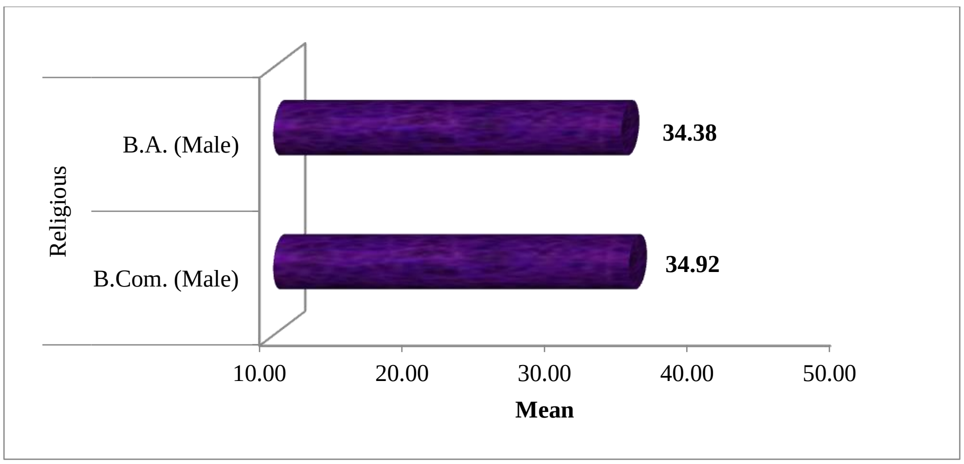

उपरोक्त सारणी से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष विद्यार्थियों का धार्मिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 34.92 एवं 34.38 है जबकि मानक विचलन 4.69 एवं 4.34 है। परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत पुरुष छात्रों की तुलना में व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का धार्मिक मानवीय मूल्य का औसत स्कोर 0.54 अधिक है। परिगणित टी का मान 1.036, डिग्री ऑफ फ्रीडम 298, पी-वैल्यू 0.301 है जो कि सार्थकता मान 0.05 से अधिक है परन्तु सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। साथ ही दोनों समूह के छात्रों के टी का मान में बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। अतः यह स्वतन्त्र वितरण की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं की जाती है। प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का धार्मिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, अर्थात दोनो समूहों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्र लगभग बराबर धार्मिक दृष्टिकोंण रखते हैं।

निष्कर्ष-

इसके पूर्व के अध्याय में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या का प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसके आधार पर कई निष्कर्ष प्राप्त हुए, उनको निम्नवत् प्रस्तुत किया जा रहा है -

- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्रों का सैद्धांतिक मानवीय मूल्य लगभग समान है।
- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का आर्थिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्रों का आर्थिक मानवीय मूल्य लगभग बराबर है।
- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सौन्दर्यात्मक मानवीय मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो पाठ्यक्रमों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्रों का सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोंण लगभग समान है।
- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का सामाजिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो समूहों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्र समान सामाजिक दृष्टिकोंण रखते हैं।
- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का राजनीतिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो समूहों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्र समान राजनीतिक दृष्टिकोंण रखते हैं।
- व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों का धार्मिक मानवीय मूल्यों में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, अर्थात दोनो समूहों (व्यावसायिक एवं परम्परागत) के छात्र लगभग बराबर धार्मिक दृष्टिकोंण रखते हैं।

सुझाव-

शोध अध्ययन के निष्कर्ष आधार पर निम्नवत् सुझाव प्रस्तुत किया जा रहा है-

- विभिन्न व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के अनुसार देखा जा सकता है।
- विभिन्न व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत के छात्र-छात्राओं को

जाति वर्ग (सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति) के अनुसार देखा जा सकता है। विभिन्न व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को धर्म के अनुसार देखा जा सकता है।

- विभिन्न व्यावसायिक एवं परम्परागत पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को आर्थिक स्थिति के अनुसार देखा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, डॉ0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अल्का (2011). शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ठ-79
- डॉ0 एस0एस0, माथुर (2013). शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा
- डॉ0 भौमिक, अभिजीत (2014). सामाजिक जीवन मूल्य एवं शिक्षा ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
- डॉ मिश्र, भास्कर (2014). मूल्य आधारित शिक्षा, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर0के0 एवं दूबे, श्रीकृष्ण (2007). मूल्यों का शिक्षण, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
- प्रोफेसर पाण्डेय, रामसकल (2009). मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- दास, सयान (2008). मूल्य आधारित शिक्षा, दीप प्रकाशन, नई दिल्ली।
- डॉ दूबे, पवन - मोरल डेवलपमेन्ट।

Disclaimer/Publisher's Note:
The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.